International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

महायोगी गुरु गोरखनाथ एवं बाबा बालकनाथ : नाथ सम्प्रदाय, भारतीय सामाजिक-धार्मिक जीवन तथा लोकपरम्परा का अध्ययन

डॉ. चमन लाल

सह-आचार्य, शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला–171005, हिमाचल प्रदेश, भारत।

शोध-सारांश

हमारे देश में अनेक देवी-देवताओं की उपासना के साथ-साथ **नवनाथ** तथा उनसे विकसित **चौरासी सिद्ध नाथों** की परम्परा का भी विशेष महत्व है। लोकमान्यता के अनुसार ये सिद्ध योगबल से दीर्घायु होते हैं और आज भी अपने सूक्ष्म स्वरूप में लोककल्याण के लिए विचरण करते हैं। नाथ परम्परा में गुरु गोरखनाथ का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। इसी प्रकार चौरासी सिद्धों में बाबा बालक नाथ का नाम अत्यंत श्रद्धा और सम्मान के साथ लिया जाता है। भारत के प्रमुख तीर्थस्थलों में अमरनाथ मंदिर, केदारनाथ मंदिर और बद्रीनाथ मंदिर जैसे पवित्र धाम विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। हिमाचल प्रदेश देवभूमि के रूप में विख्यात है, जहाँ देवी-देवताओं, सिद्धों और लोकदेवताओं के प्रति लोगों की अटूट श्रद्धा और आस्था देखने को मिलती है। यहाँ की जनश्रुतियों के अनुसार देवी-देवताओं का हिमालय क्षेत्र में निरंतर आगमन और विचरण होता रहा है। हिन्दू धर्म में देवताओं को परमात्मा के दिव्य स्वरूप का लौकिक प्रतिनिधि माना गया है। भारतीय संस्कृति का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप में धार्मिक आस्था, आध्यात्मिक चेतना और सांस्कृतिक परम्पराओं से जुड़ा हुआ है। हिमाचल प्रदेश में सिद्धों तथा लोकदेवताओं की परम्परा प्राचीन काल से आज तक अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है, जो यहाँ की सांस्कृतिक विरासत और लोकविश्वास का महत्वपूर्ण आधार है। भारतीय सभ्यता में नाथ सम्प्रदाय योग, तप, आध्यात्मिक साधना तथा सामाजिक समरसता की एक महत्त्वपूर्ण परम्परा है। इस परम्परा का विकास आदिनाथ (भगवान शिव) से प्रारम्भ होकर मत्स्येन्द्रनाथ तथा महायोगी गुरु गोरखनाथ के माध्यम से व्यापक रूप में हुआ। गुरु गोरखनाथ ने नाथ सम्प्रदाय को संगठित स्वरूप प्रदान करते हुए हठयोग, गुरु-शिष्य परम्परा, नैतिक जीवन तथा सामाजिक समरसता का संदेश दिया। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य गुरु गोरखनाथ के सामाजिक एवं धार्मिक योगदान तथा बाबा बालकनाथ से संबंधित लोकपरम्पराओं का विश्लेषण करना है। अध्ययन में ऐतिहासिक ग्रन्थों, गोरखवाणी, नाथ साहित्य तथा हिमाचल प्रदेश में प्रचलित लोककथाओं का गुणात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि गुरु गोरखनाथ ने भारतीय समाज में योग-साधना को जनसामान्य तक पहुँचाने, जातीय एवं सामाजिक भेदभाव को कम करने तथा गुरु-परम्परा को सुदृढ़ बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। दूसरी ओर बाबा बालकनाथ से संबंधित कथाएँ हिमाचल प्रदेश की लोक-सांस्कृतिक विरासत का महत्त्वपूर्ण भाग हैं। इनमें भक्ति, तप, गुरु-भक्ति तथा लोकविश्वास के अनेक आयाम दिखाई देते हैं। यद्यपि इन कथाओं के ऐतिहासिक प्रमाण सीमित हैं, तथापि धार्मिक आस्था एवं सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में इनका विशेष योगदान है।

संकेत शब्द: नाथ सम्प्रदाय, गुरु गोरखनाथ, बाबा बालकनाथ, हठयोग, लोककथा, भारतीय संस्कृति, सामाजिक समरसता।

प्रस्तावना

भारत का सामाजिक एवं धार्मिक जीवन अत्यन्त समृद्ध, बहुआयामी तथा आध्यात्मिक मूल्यों से परिपूर्ण रहा है। भारतीय संस्कृति में अनेक संतों, सिद्धों एवं योगियों ने समाज को आध्यात्मिक दिशा प्रदान की। इन्हीं महान विभूतियों में नाथ सम्प्रदाय का विशेष स्थान है। नाथ सम्प्रदाय केवल एक धार्मिक संगठन नहीं, बल्कि योग, साधना, तप, आत्मानुशासन तथा सामाजिक समानता पर आधारित एक व्यापक आध्यात्मिक आन्दोलन है। नाथ परम्परा के अनुसार आदिनाथ अर्थात् भगवान शिव को इस सम्प्रदाय का मूल प्रवर्तक माना जाता है। योगी मत्स्येन्द्रनाथ ने इस ज्ञान को व्यवस्थित रूप प्रदान किया तथा उनके प्रमुख शिष्य महायोगी गुरु गोरखनाथ ने सम्पूर्ण भारत में नाथ सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार किया। हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार गुरु गोरखनाथ का आविर्भाव लगभग दसवीं शताब्दी में माना जाता है और उन्होंने नाथ परम्परा को संगठित एवं प्रभावशाली स्वरूप प्रदान किया (द्विवेदी, 1978)।

शोध के उद्देश्य

1. नाथ सम्प्रदाय के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन करना।
2. महायोगी गुरु गोरखनाथ के सामाजिक एवं धार्मिक योगदान का विश्लेषण करना।
3. बाबा बालकनाथ से संबंधित लोकपरम्पराओं का सांस्कृतिक अध्ययन करना।
4. नाथ सम्प्रदाय की गुरु-शिष्य परम्परा एवं योग-दर्शन के सामाजिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) एवं वर्णनात्मक (Descriptive) शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें पुस्तकों, शोध-पत्रों, नाथ साहित्य, गोरखवाणी तथा लोकपरम्पराओं से प्राप्त द्वितीयक स्रोतों का विश्लेषण किया गया है। ऐतिहासिक तथ्यों एवं लोकविश्वासों को पृथक रखते हुए तुलनात्मक अध्ययन अपनाया गया है।

गुरु गोरखनाथ का सामाजिक एवं धार्मिक योगदान

गौरख नाथ जी ने नाथ पंथ को व्यवस्थित और व्यापक रूप प्रदान किया । गुरु गौरख नाथ को चुनौतियों से भरपूर माना गया है । "जाग मछँदर गौरख आया " जैसे कथन से स्पष्ट होता है कि गुरु गौरख नाथ अपने गुरु मत्स्येंद्रनाथ को भी चुनौती देने और सावधान करने से नहीं चूकते थे । हठ योग की साधना का परिचय देते हुए गौरख नाथ जी ने बहुत सी बातें कही हैं । उन्होंने योगियों के लिए नीतिपरक बातें , सामाजिक आचार व्यवहार पर विचार विमर्श प्रस्तुत किया है । गुरु गौरख नाथ ने नाथ सम्प्रदाय को भारत के कोने - कोने में पहुंचाया । उन्होंने योगानुभव के बल पर प्रत्यक्ष तत्व का साक्षात्कार किया था । गुरु गौरख नाथ जी धर्म गुरु थे । कहा जाता है कि ज्वाला देवी के मंदिर से खिचड़ी मांगने निकले गौरख नाथ का मन राप्ती के तट पर सुरम्य वन क्षेत्र में आकर ठहर गया । उन्हीं के नाम पर गोरखपुर नगर बसा अखंड धूणा एवं अखण्ड दीप आज भी गुरु गौरख नाथ की अखण्ड साधना की अमरता का संदेश देर रहे हैं । गुरु गोरखनाथ का व्यक्तित्व भारतीय धार्मिक इतिहास में अत्यन्त प्रभावशाली रहा है। उन्होंने नाथ सम्प्रदाय को एक संगठित स्वरूप प्रदान किया तथा योग-साधना को जनसामान्य तक पहुँचाया। उनके अनुसार मनुष्य का वास्तविक उत्थान बाह्य आडम्बरों से नहीं, बल्कि आत्मसंयम, गुरु-भक्ति तथा साधना

से संभव है। हठयोग की साधना के माध्यम से उन्होंने शरीर, मन एवं आत्मा के संतुलन का मार्ग प्रस्तुत किया। उनकी शिक्षाओं में सत्य, संयम, करुणा, सदाचार तथा आत्मानुशासन का विशेष महत्त्व है। वे धार्मिक कट्टरता के विरोधी तथा मानवीय मूल्यों के समर्थक थे। लोकमान्यता के अनुसार ज्वालामुखी देवी से खिचड़ी माँगते हुए वे राप्ती नदी के तट पर पहुँचे और वहीं उनकी तपस्थली विकसित हुई, जिसके आधार पर आगे चलकर गोरखपुर नगर का विकास हुआ। आज भी वहाँ स्थित अखण्ड धूना तथा अखण्ड दीप उनकी साधना की स्मृति के प्रतीक माने जाते हैं।

बाबा बालक नाथ को पौणाहारी के नाम से भी जाना जाता है। लोकमान्यता के अनुसार उन्हें यह उपाधि इसलिए प्राप्त हुई क्योंकि नाथ सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात उनके गुरु दत्तात्रेय ने उन्हें अन्न का त्याग करने का उपदेश दिया। कहा जाता है कि गुरु की आज्ञा के अनुसार बाबा बालक नाथ जी ने आजीवन अन्न का सेवन नहीं किया तथा केवल दूध और वायु के सहारे तप एवं साधना की। इसी कारण वे पौणाहारी बाबा के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह स्वरूप उनके कठोर संयम, वैराग्य और योगसाधना का प्रतीक माना जाता है तथा भक्तजन आज भी उन्हें इसी श्रद्धा और सम्मान के साथ स्मरण करते हैं।

गुरु गोरखनाथ केवल योगी ही नहीं थे, बल्कि समाज सुधारक, दार्शनिक तथा लोकजागरण के अग्रदूत भी थे। उन्होंने हठयोग को साधना का प्रभावी माध्यम माना तथा मनुष्य के नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास पर बल दिया। उनकी वाणी में गुरु की महत्ता सर्वोच्च है–

"गुर कीजै गहिला, निगुरा न रहिला।
गुर बिन ज्ञान न पायला रे भाइला॥" -
(गोरखवाणी, पद-34)

इस पद के माध्यम से गुरु गोरखनाथ स्पष्ट करते हैं कि गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है। जैसे कोयला दूध से धोने पर भी श्वेत नहीं हो सकता, उसी प्रकार गुरु के मार्गदर्शन के बिना आत्मज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। गुरु गोरखनाथ ने योग को केवल व्यक्तिगत मुक्ति का साधन नहीं माना, बल्कि समाज निर्माण का माध्यम भी बनाया। उन्होंने जाति, वर्ण तथा ऊँच-नीच के भेदभाव से ऊपर उठकर समस्त मानव जाति को साधना एवं सदाचार का संदेश दिया। इसी कारण उनका प्रभाव भारत के अतिरिक्त नेपाल, तिब्बत, भूटान, म्यांमार तथा हिन्दूकुश क्षेत्र तक दिखाई देता है (राव, 2019)।

एक दिन जूनागढ़ की गिरनार पहाड़ी पर वे "स्वामी दत्तात्रेय" से मिले एवं उनके सानिध्य में रहने लगे। गुरु दत्तात्रेय जी द्वारा बालक नाथ को दीक्षा दी जाती है। इसी स्थान पर बाबाजी ने स्वामी दत्तात्रेय से " सिद्ध" की बुनियादी शिक्षा ग्रहण करी और "सिद्ध" की उपाधि प्राप्त की। उसी समय से बाबा जी को बाबा बालकनाथ जी के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। किवदंतियों में कहा जाता है कि गरुने के पेड़ नीचे बाबाजी ने तपस्या की थी। शाहतलाई में आज भी यह गरुने का पेड़ विद्यमान है। सिद्ध बाबा बालक नाथ जी की महिमा चारों दिशाओं में फैल गई और जो भी सच्चे मन से बाबा जी के पास जाता है, बाबा जी उसके दुख-दर्द दूर कर देते हैं और उसकी मनोकामनाएं पूरी कर देते हैं ।

बाबा बालकनाथ एवं लोकपरम्परा

हिमाचल प्रदेश की धार्मिक परम्पराओं में बाबा बालकनाथ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। लोकमान्यताओं के अनुसार वे भगवान शिव के अनन्य भक्त थे। शाहतलाई में उन्होंने माता रत्नो की गायों की सेवा करते हुए बारह वर्षों तक तपस्या की। इस कथा में सेवा, त्याग, भक्ति तथा तप का आदर्श रूप दिखाई देता है। लोककथा के अनुसार जब ग्रामीणों ने उन पर खेतों के नुकसान का आरोप लगाया, तब उन्होंने अपनी योगशक्ति से यह सिद्ध कर दिया कि फसलों को कोई हानि नहीं हुई थी। इस प्रसंग में सत्य, धैर्य तथा क्षमा की भावना प्रमुख रूप से उभरकर सामने आती है।

बालकनाथ बाबा गुफा वालेया, तेरी सदा ही जय।
थोड़ा वालेया, तेरी सदा ही जय।
बालक ऋषिया, धारी आया शरण तुम्हारी।
जगत गुरु, पृथ्वी के धनी।
तेरे नाम की ओट,
विरद की लाज।
नाल हमेती हो तुसी,
नाम घुमंडी, तुसी हो बनखंडी।
रख भक्तों की लाज।
जय बाबा बालकनाथ जी।

बाबा बालक नाथ जी सर्व महासिद्ध माने गये हैं । ब्रह्मा ज्योति भिन्न - भिन्न रूपों में अवतार लेती है जैसे कि स्कन्द , कार्तिकेय एवं बालक नाथ आदि । बाबा बालक नाथ जी देवत्व के महान व्यक्तित्व हैं । श्री सिद्ध बाबा बालक नाथ जी के जीवन दर्शन में जनश्रुतियों, गाथाओं एवं शास्त्रों के अनुसार जीवन दर्शन इस प्रकार है : -

1. बाबा जी का पहला जन्म

श्री सिद्ध बाबा बालक नाथ जी का प्रथम जन्म स्कन्द पुराण के अनुसार पार्वती के पुत्र कार्तिकेय के रूप में हुआ था ।

2. बाबा जी का दूसरा जन्म

बाबा जी का दूसरा जन्म कौल के रूप में माना जाता है ।

3. बाबा जी का तीसरा जन्म

बाबा जी के तीसरे जन्म का संबंध महाऋषि ब्यास के पुत्र शुकदेव मुनि के रूप में माना जाता है ।

4. बाबा जी का चौथा जन्म

बाबा जी का चौथा जन्म कलियुग में कठियावाड़ क्षेत्र में माता लक्ष्मी एवं पिता विष्णु शर्मा के बालक रूप में माना जाता है ।

लोकजीवन में प्रचलित कथाओं के अनुसार एक बार की बात है कि एक ब्रह्मचारी बर्फीली झील के किनारे बहुत दिनों तक भूखा प्यासा बैठा था । उनके दिल में भगवान् भोले नाथ के दर्शन करने की बहुत इच्छा थी । एक दिन ब्रह्मचारी की इच्छा पूरी हुई । जिस स्थान पर वह ब्रह्मचारी तपस्या करने बैठा था वहाँ उनको माता धर्मो उनकी तरफ आती हुई दिखाई दी । माई धर्मो को देखकर ब्रह्मचारी बहुत प्रसन्न हुआ । माता धर्मो ने ब्रह्मचारी से पूछा बेटा आप यहाँ अकेले उदास क्यों बैठे हो । अपनी उदासी का कारण बताओ । यहाँ पर बहुत ठण्ड है इस ठण्ड में अकेले क्यों आये हो । ठंड के कारण आप असहज हो सकते हो ।

ब्रह्मचारी ने माता धर्मो को बताया कि हे माता मैं भोले नाथ का नाम जपते - जपते मोह माया त्यागकर भगवान भोले नाथ के दर्शन की इच्छा रखके यहाँ कैलाश मार्ग पर आया हूँ । इतने बड़े - बड़े पहाड़ों को देखकर मुझे डर लग रहा है । ऊपर कैलाश पर्वत दिख रहा है लेकिन वहाँ पर पहुँचने के मार्ग की मुझे जानकारी नहीं है । लेकिन मुझे भगवान भोले के दर्शन करने जाना है । मैं यहाँ से भोले नाथ के दर्शन किये विना बापिस नहीं जाऊँगा । माता धर्मो ने कहा बेटा यहाँ थोड़ी देर बाद गहरा अँधेरा छा जायेगा अकेले तुम यहां इतनी ठण्ड में कैसे रहोगे । थोड़ी दूरी पर मेरी कुटिया है उसमें ही आज की रात विश्राम कर लो । मैं आपको कुटिया में पहुँचकर कैलाश पर्वत का राह बताऊँगी । उस मार्ग से आप बड़ी आसानी से भोले नाथ जी के दर्शन कर पाओगे ।

इसके बाद माता धर्मों और ब्रह्मचारी कुटिया की तरफ चल पड़े। कुटिया में पहुँचकर माता धर्मों ने ब्रह्मचारी को बड़े स्नेह से खाना परोसा। उसके बाद ब्रह्मचारी ने कुटिया में विश्राम किया। सुबह जल्दी उठकर ब्रह्मचारी चलने को तैयार हो गए। जैसे ही ब्रह्मचारी चलने को तैयार हुए माता धर्मों ने उससे कहा बेटा इस झील में माता पार्वती प्रतिदिन स्नान करने को आती हैं वही आपको भगवान भोले नाथ के दर्शन करवाने में मदद कर सकती हैं। महायोगी ब्रह्मचारी ने बारह घड़ी माता धर्मों की कुटिया में बितायी। उसके उपरान्त महायोगी ब्रह्मचारी मानसरोवर झील की तरफ चल पड़े।

मानसरोवर झील के पास पहुंचकर ब्रह्मचारी तपस्या में लीन हो गए। उधर भोले नाथ ने माता पार्वती से कहा द्वापर युग में सोमवती अमावस्या आखिरी बार आ रही है। इस अमावस्या पर स्नान करना बहुत फलदायक है। 'सोमवती' अमावस्या के दिन स्नान करके एवं व्रत करने से सहस्र गौदान का फल मिलता है। मेरा आपसे आग्रह है कि आप इस समोती अमावस्या पर अवश्य गंगा स्नान करने जाएँ। माता पार्वती भगवान भोले नाथ को प्रणाम करके मान सरोवर झील पर पहुंच गईं। वहाँ पहुंच कर उन्होंने महायोगी ब्रह्मचारी को तपस्या में लीन देखा और उनसे कहा बेटा आप कौन हो। आप यहाँ इतनी ठंड में तपस्या क्यों कर रहे हो। महायोगी ने कहा हे माता मैं लोक आराम छोड़ कर यहां भगवान भोले नाथ के दर्शन करने आया हूँ। माता आप ही मुझे भोले बाबा के दर्शन करवा सकती हैं। माता पार्वती ने ब्रह्मचारी बालयोगी को भगवान भोले नाथ का ध्यान करने का आग्रह किया। ब्रह्मचारी तुरंत भोले नाथ को स्मरण करने लग पड़े। माता पार्वती ने अपने आशीर्वाद से महायोगी ब्रह्मचारी को बाल रूप में बना दिया। उन्हें आँखे बंद करने को कहा और उन्हें अपने साथ कैलाश पर्वत की तरफ ले गईं। पर्वत पर पहुंच कर माता पार्वती ने बालक से कहा जब तक में बापिस न आऊं आप इसी स्थान पर रुको। माता पार्वती भोले नाथ के चरणों में पहुंच कर सेवा करने लगी। भोले नाथ ने पार्वती की सेवा को देखकर कहा आप आज अलग ढंग से सेवा में लीन हो। इसका क्या कारण है। माता पार्वती ने भोले नाथ जी से वचन लिया कि आप मेरी बात अवश्य मानोगे। उन्होने गौरा माता को बचन दिया एवं कारण पूछा। माता पार्वती ने कहा हे प्रभु , जब आज मैं मानसरोवर झील पर स्नान करने के लिए गयी थी तो वहाँ मुझे एक बालक आपकी तपस्या करते हुए मिला। वह बालक आपके दर्शन करना चाहता है। वह बालक आपकी भक्ति में हर वक़्त लीन रहता है। उसने जिद की है। वह बालक बहुत हठी है। वह बालक कैलाश पर्वत पर ही आपका इंतज़ार कर रहा है। भगवान् भोले नाथ ने पार्वती से उस बालक को यहाँ आने को कहा। बालयोगी ने भगवान् भोले नाथ के दर्शन किये एवं माता धर्मों को भी दर्शन देने का आग्रह किया। भगवान भोले नाथ माता धर्मों की कुटिया में पहुंचे और धर्मों को दर्शन दिया।

माता धर्मों ने भोले बाबा के अपनी कुटिया में ही दर्शन किये एवं उन्हें कहा हे प्रभु मैं आपके दर्शन करके धन्य हो गयी। मेरा जीवन सफल हो गया। भगवान भोले नाथ ने बालक को कहा हे बालक तुम कलयुग में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त करोगे। धर्मों भी कलयुग में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। बालक तुमने धर्मों की कुटिया में एक रात बारह घड़ियाँ गुजारी हैं आपको कलयुग में माता धर्मों के घर जाकर बारह वर्ष चाकरी करनी पड़ेगी।

जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती गई, बाबा बालक नाथ को आध्यात्मिकता की ओर एक मजबूत झुकाव महसूस हुआ । उन्होंने अपना घर त्याग दिया और हिमालयी क्षेत्रों, विशेषकर गुफाओं और जंगलों में ध्यान और तपस्या की आजीवन यात्रा शुरू कर दी ।

एक प्रचलित कथा के अनुसार बाबा बालक नाथ, एक छोटे बच्चे के रूप में, एक घने जंगल में चले गए जहाँ क्रूर जंगली जानवर स्वतंत्र रूप से घूमते थे। जानवरों से डरने के बजाय, वह प्रेम और करुणा के साथ उनके पास आया। उनकी दिव्य उपस्थिति और आभा का एक उल्लेखनीय प्रभाव था: जंगली जानवर न केवल उन्हें नुकसान पहुँचाने से बचते थे बल्कि उनके चारों ओर शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व में रहते थे । यह कहानी बाबा बालक नाथ की भय से उबरने और सद्भाव फैलाने की क्षमता पर जोर देती है ।

कलयुग में सिद्ध बाबा बालकनाथ जी ने गुजरात के काठियावाड़ में "देव" के नाम से जन्म लिया । उनकी माता जी का नाम लक्ष्मी और पिता का नाम वैष्णो वैश था, बचपन से ही बाबा बालक नाथ जी आध्यात्मिकता की राह पर चल

पड़े थे । बालक के माता - पिता ने उनसे कहा बालक आपको अपना घर बसा लेना चाहिए। आपकी शादी करने का निश्चय किया है , परन्तु बाबा बालक जी ने उनके विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया एवं घर बार त्याग कर अपने परिवार को छोड़ कर ' परम सिद्धी ' की राह पर पहाड़ों के तरफ निकल पड़े ।

बाबा बालक नाथ जी के जीवन से जुड़े विभिन्न प्रसंग हिमाचल प्रदेश की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं में विशेष महत्व रखते हैं। इन्हीं प्रसंगों में माता रत्नों का उल्लेख भी श्रद्धा और विश्वास के साथ किया जाता है। लोकमान्यता के अनुसार माता रत्नों बाबा बालक नाथ जी की अनन्य भक्त थीं, जिनका जीवन बाबा जी के प्रति समर्पण, आस्था और भक्ति भावना से जुड़ा हुआ था। यह प्रसंग संत और भक्त के मध्य स्थापित आध्यात्मिक संबंधों को उजागर करता है।

जनश्रुतियों में वर्णित कथाओं के अनुसार माता रत्नों ने बाबा बालक नाथ जी के सिद्ध स्वरूप को पहचानकर उनके प्रति गहरी श्रद्धा प्रकट की। बाबा जी ने भी अपने आध्यात्मिक आदर्शों के अनुरूप भक्तों को सत्य, संयम, सेवा और सदाचार का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी। माता रत्नों से संबंधित कथा में भक्ति की शक्ति, गुरु-कृपा और आत्मिक विश्वास की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति में संत परम्परा केवल धार्मिक विश्वास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को भी अभिव्यक्त करती है। बाबा बालक नाथ जी और माता रत्नों से जुड़ा प्रसंग इसी परम्परा का एक उदाहरण है, जिसमें श्रद्धा, सेवा और आध्यात्मिक समर्पण को जीवन के महत्वपूर्ण आधारों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

बाबा बालक नाथ जी के जीवन-दर्शन में लोककल्याण, तपस्या, ब्रह्मचर्य और भक्तों के प्रति करुणा का विशेष स्थान है। माता रत्नों से जुड़ी लोककथा उनके इसी लोकदेवता स्वरूप को प्रकट करती है। वर्तमान समय में भी यह प्रसंग श्रद्धालुओं को विश्वास, नैतिकता और आध्यात्मिक मूल्यों के पालन की प्रेरणा देता है।

बाबा बालकनाथ ने माता रत्नों से कहा कि उसने कोई नया कर्ज नहीं लिया है क्योंकि उसने कभी वह रोटी और लस्सी नहीं खाई जो वह उसके लिए रोज लाती थी । बाबा बालक ने बरगद के पेड़ के तने पर अपना चिमटा फेंका, जिसके नीचे वह पिछले बारह वर्षों से बैठ कर तपस्या कर रहे थे। उन्होंने कहा, अब "अपनी सारी बारह वर्ष की रोटियाँ ले लो " । हिमाचल प्रदेश में हमीरपुर जिला में स्थानीय भाषा में लोक कलाकारों द्वारा गाकर सुनाया जाता है :-

बारां सालां दियाँ चक रोटियाँ ते लस्सी , बारां सालां दियाँ चक रोटियाँ ते लस्सी ,
तेरे मीणेया ने दिल दिता साड़ अमिएं , तेरे मीणेया ने दिल दिता साड़ अमिएं ,
अज दोहां चले जोगी घर शड्के , एमें फ़करां दे नाल तूँ लड़ अमिएं ।

जब आग का चिमटा पेड़ के तने पर लगता है तो पेड़ का एक हिस्सा टूट गया । जिससे अन्दर चपातियों का ढेर दिखाई दिया। फिर उसने अपना चिमटा जमीन में मारा और उससे कहा, 'और यह रही माई आपकी बारह साल की लस्सी।' उसी स्थान से छाछ (लस्सी) का झरना फूट पड़ा, जो जल्द ही छाछ का तालाब बन गया। यह तालाब आज भी शाहतलाई में देखा जा सकता है, जिससे इस जगह का नाम पड़ा। छाछ तलाई का अर्थ है 'छाछ का तालाब' और बाद में, 'चाच' शब्द शाह बन गया। उस स्थान पर जहां पौराणिक बरगद का पेड़ स्थित था, एक खोखली संरचना का निर्माण किया गया है जिसे 'खोखले पेड़ के नीचे तपस्या की भूमि' कहा जाता है। इसके करीब बाबा बालकनाथ, गुगा चौहान और नाहर सिंह की मूर्तियों वाला एक मंदिर है। बाबा के भक्तों का मानना है कि उस स्थान की मिट्टी मवेशियों के पैर रोग की कारगर दवा है ।

गुरु गोरखनाथ एवं बाबा बालकनाथ का मिलन : एक लोककथात्मक अध्ययन

हिमाचल प्रदेश की जनश्रुतियों में वर्णित है कि गुरु गोरखनाथ शाहतलाई पहुँचे और बाबा बालकनाथ की तपस्या से प्रभावित हुए। उन्होंने उन्हें अपना शिष्य बनाने का प्रस्ताव रखा, किन्तु बाबा बालकनाथ ने स्वयं को भगवान दत्तात्रेय

का शिष्य बताते हुए इसे विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। इसके पश्चात दोनों के मध्य योग-सिद्धियों की परीक्षा का वर्णन मिलता है। कथा के अनुसार गुरु गोरखनाथ द्वारा आकाश में फेंकी गई मृगछाला को बाबा बालकनाथ ने पुष्पों में परिवर्तित कर दिया। इसके अतिरिक्त जब उनके कानों में बलपूर्वक कुण्डल पहनाने का प्रयास किया गया, तब उनके कानों से दूध प्रवाहित होने लगा। आगे चलकर एक राक्षस के उद्धार तथा मंदिर में रोट चढ़ाने की परम्परा का उल्लेख भी मिलता है।

नाथ पंथ - सिद्ध मत है , योग मत है । गुरु गौरख नाथ जी का स्पष्ट मत है कि बिना गुरु के स्वरूप , ज्ञान नहीं हो सकता है ।

गुर कीजै गहिला निगुरा न रहिला।
गुर बिन ग्यांन न पायला रे भाइला॥
दूधै धोया कोइला उजला न होइला।
कागा कंठै पहुप माल हंसला न भइला॥
आभा जैसी रोटली कागा ले जाइला।
पूछौं म्हारा गुरु नै कहां बैसि खाइला॥ -
गौरखवाणी - 34

इन घटनाओं के ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। अतः इन्हें ऐतिहासिक तथ्य के रूप में नहीं, बल्कि हिमाचल प्रदेश की लोकपरम्परा एवं धार्मिक जनश्रुति के रूप में समझा जाना चाहिए। ऐसी कथाएँ किसी संत की ऐतिहासिक जीवनी से अधिक उसके प्रति समाज की आस्था, श्रद्धा तथा सांस्कृतिक स्मृति को व्यक्त करती हैं। महायोगी गुरु गौरख नाथ सर्व समाज के नेता और पथ प्रदर्शक थे । नेपाल, तिब्बत , म्यांमार , भूटान के साथ - साथ पश्चिमोत्तर में हिन्दुकुश की पहाड़ियों से लेकर पूर्व में समुद्र तक समस्त भू-भाग तक गौरख नाथ का डंका बजा ।

निष्कर्ष

महायोगी गुरु गोरखनाथ भारतीय योग, दर्शन एवं सामाजिक चेतना के महान प्रवर्तक थे। उन्होंने नाथ सम्प्रदाय को संगठित रूप प्रदान करते हुए योग, नैतिकता, गुरु-भक्ति तथा सामाजिक समरसता का संदेश दिया। उनकी शिक्षाएँ आज भी भारतीय समाज में प्रासंगिक हैं। बाबा बालकनाथ से संबंधित कथाएँ हिमाचल प्रदेश की समृद्ध लोक-सांस्कृतिक परम्परा का अभिन्न अंग हैं। इनमें भक्ति, सेवा, तप, करुणा तथा गुरु-परम्परा के आदर्शों का समावेश है। यद्यपि इनके ऐतिहासिक प्रमाण सीमित हैं, तथापि सांस्कृतिक अध्ययन, लोकसाहित्य तथा धार्मिक समाजशास्त्र की दृष्टि से इनका महत्त्व अत्यधिक है। इसलिए इतिहास और लोकविश्वास–दोनों को उनके पृथक संदर्भों में समझना भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से आवश्यक है। बाबा बालक नाथ जी का जीवन दर्शन एक सिद्ध पुरुष स्वरूप है । इनका संबन्ध भगवान् भोले नाथ जी से है । बाबा जी सतयुग में स्कन्द , त्रेता में कौल , द्वापर में महाकौल एवं कलयुग में बालक नाथ नाम से प्रसिद्ध हुए हैं । बाबा बालक नाथ जी हिमाचल प्रदेश के दियोटसिद्ध में लाखों श्रद्धालुओं के लिए विख्यात हैं । बाबा जी का गुरु दत्तात्रेय का शिष्य बनना एवं शाहतलाई में योगी गुरु गोरखनाथ जी के साथ आध्यात्मिक संवाद जनमानस में साभिप्राय है । हिमाचल प्रदेश के जिला हमीरपुर के गाँव चकमोह का संबन्ध भी बाबा बालक नाथ जी के जीवन दर्शन से मिलता है । यहाँ बाबा भरथरी जी ने भी बालक नाथ जी के साथ भक्ति की है जिसके प्रसंग लोकजीवन में प्रचलित कथाओं में अंकित हैं । बाबा बालक नाथ जी के जीवन दर्शन से हमें अपने जीवन में अनुशासन कायम करना सीखना चाहिए । तप सीखना चाहिए । बाबा जी ने अपने जीवन में तप , अनुशासन पर कायम रहकर गुरुभक्ति में आध्यात्मिकता की अलख जगाई । बाबा बालक नाथ

जी का सम्पूर्ण जीवन ब्रह्मचर्य पर आधारित रहा। क्योंकि आध्यात्मिक पथ पर ब्रह्मचर्य प्रगति के लिए एक महान और सबसे शुद्ध साधन है। बाबा बालक नाथ जी व्यवहारिक दृष्टि से भी मन, बुद्धि व वाणी को सहज रखने के लिए जाने जाते हैं। बाबा बालक नाथ जी के जीवन दर्शन का आधार हमारे पुराण एवं साहित्य के सन्दर्भ हैं। सिद्ध परम्परा पर सिद्धों का दर्शन सर्वोच्च मार्ग दिखाता है। बाबा जी का जीवन दर्शन महायोगी के रूप में झलक दिखाता है। आज भी जब चैत्र माह के मेले प्रारम्भ होते हैं तो श्रद्धालुओं द्वारा बाबा बालक नाथ जी के जयकारे घोष कलयुग में बाबा बालक नाथ जी की प्रसिद्धि को जनमानस में दर्शाते हैं। वर्तमान समय में श्री सिद्ध बाबा बालक नाथ मंन्दिर में महंत राजिंद्र गिरि जी महाराज सेवा कर रहे हैं । आम जनमानस की यह मान्यता है कि भक्त मन में जो भी इच्छा लेकर जाए वह अवश्य पूरी होती है । बाबा जी अपने भक्तों की मनोकामना पूर्ण करते हैं इसलिए देश-विदेश व दूर-दूर से श्रद्धालु बाबा जी के मंदिर में अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने आते हैं।

संदर्भ :

1. द्विवेदी, ह. प्र. (1978). नाथ सम्प्रदाय. नैवेद्य निकेतन.
2. द्विवेदी, ह. प्र. (1981). मध्यकालीन धर्म साधना. राजकमल प्रकाशन.
3. बंगा, सी. एल. (2024). श्री सिद्ध बाबा बालक नाथ. ISBN: 978-93-5915-044-4. जालंधर: मैट्रो प्रिंटनर्ज़।
4. राव, प. क. (2019). महायोगी गुरु गोरक्षनाथ. महायोगी गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय.
5. गोरखवाणी. (अप्रकाशित/विभिन्न संस्करण).
6. श्री गोरख बोध वाणी संग्रह. (सं.). फूलचंद बुकसेलर, पुरानी मंडी, अजमेर.
7. श्रीमद्भागवत महापुराण। गीता प्रेस, गोरखपुर।
8. स्कन्द पुराण। गीता प्रेस, गोरखपुर।
9. शिव पुराण। गीता प्रेस, गोरखपुर।
10. गोरखबानी। गोरखनाथ मठ, गोरखपुर।
11. नाथ सम्प्रदाय। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रकाशित हिमाचल की लोक संस्कृति एवं लोकदेवता संबंधी प्रकाशन।
13. श्री सिद्ध बाबा बालक नाथ मंदिर न्यास के आधिकारिक प्रकाशन, स्मारिकाएँ एवं सूचना-पुस्तिकाएँ।
14. हिमाचल प्रदेश की लोकश्रुतियाँ, लोककथाएँ एवं मौखिक परम्पराएँ (Oral Traditions)।